શ્રી યશોવિજયજી
જૈન ગ્રંથમાળા
દાદાસાહેબ, ભાવનગર.
ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨
૩૦૦૪૮૪૬
૪૩૧૭

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ऽऽ.
2024

श्री संपतविजयजी महाराजके उपदेशसें.
अमरावतीवाले शेठ फतेचन्दजी मांगीलाल तरफसें भेट.

॥ अर्हम् ॥

श्री हंसविजयजी फ्री लायब्रेरी ग्रंथमाला नं. १९

श्री अष्टापद तीर्थ पूजा.

योजक-

जैनाचार्य श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वर शिष्य मुनिमहाराज
श्री लक्ष्मीविजयजी शिष्य मुनिराज श्री हर्षविजयजी
शिष्य मुनिराजश्री वल्लभविजयजी.

प्रकाशक-
श्री हंसविजयजी फ्री लायब्रेरीना
सेक्रेटरी, जेशंगभाइ छोटालाल सुतरीआ,
लुणसावाडा मोटी पोल, अहमदाबाद.

धी युनियन प्रीन्टींग प्रेस कंपनी लीमीटेडमां शा.
मोहनलाल चीमनलाले छाप्युं-अमदावाद.

वीर संवत् २४४९ आत्म संवत् २७	प्रथमावृत्ति २०००	विक्रम संवत १९७९ ईसवीसन १९२३

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्री राजनगर (कीकाभटनी पोळ मंडन)–डोसला पार्श्वनाथ अने विमलजीन स्तवन

॥ ओधवजी संदेशो कहेज्यो शामने–ए देशी. ॥

श्री डोसला पार्श्वनाथ अने विमल प्रभु,
कीकाभटनी पोळना देवल मांही जो ।
हेठल ऊपर मूलनायक प्रभु पूजतां,
पाप टले तत्काल पूजकनां तांही जो ॥ श्री डो० ॥१॥

त्रण भूवनना मित्र प्रभु छे मनोहरु,
विमलनाथजी निर्मलता धरनार जो ।
ऊपशम रस वरसावा दीधी देशना,
सांभली नरनारी ऊतर्यां भवपार जो ॥ श्री डो० ॥२॥

त्रण जगतना प्रकाशक छे प्रभु पासजी,
लोक तणी शुभ आशाना पुरनार जो ।
शिवनगरीमां निवास कर्यो छे स्वामीये,
नाश करी भव पास तणो ते वार जो ॥ श्री डो० ॥३॥

शुक्ल ध्यान धरनार विमल जीन नाथनी,
ऊज्वल मूर्त्ति शोभे अपरंपार जो ।
देव दानव धरे ध्यान ते निर्मळ चित्तशुं,
आतम निर्मळ करवा कारण सार जो ॥ श्री डो० ॥४॥

श्याम सुंदर शोभे मूर्त्ति प्रभु पासनी
रत्न जडित मुगटथी अति मनोहार जो ।
मेघ घटा साथे शोभे जेम वीजळी,
सेवक हंस तरे भव पारावार जो ॥ श्री डो० ॥५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विधि

सामग्री

१ अष्ट प्रकारी पूजाकी सामग्री।
२ चढता उतरती २४ तीर्थंकरकी चौमीस प्रतिमा।

१ छत्र। २ चामर। ३ चोरस सिंहासन १ बडा। ४ सोलां स्नात्री सपत्निक (सजोडे)। ५ स्नात्री ६४ पूजाके वास्ते। ६ कलश ६४। ७ करेबियां ६४ (रकेबी)। ८ कटोरियां ६४ छोटी (वाटकी)। ९ आरती ६४। १० मंगलदीवा ६४। ११ लालटेनां छोटियां ६४ (फानस)। १२ श्रीफल ९६। १३ घंट १। १४ कटोरेबडे ७ (वाडका)। १५ फूलोंके हार ६४। १६ फूलोंके हार छोटे ३२ तथा छूटे फूल। १७ थाल महोटे ७। १८ दूध पंचामृत बनानेके वास्ते। १९ परात (कथरोट) ७। २० बालटी (त्रांबाकुंडी) ७। २१ अखले (आखलिया) १०। (खुमचा मुकवानो घासनो) २२ नैवेद्य एक एक किसम (जात) का नंग (९६) छानवे छानवे २३ केले ९६। २४ फल जुदी जुदी जातके ९६। २५ सुपारी सवाशेर। २६ बादाम सवाशेर। २७ गीत्रासूत्र (मौली–नाडु–नाडाछडी) पावसेर। २८ अगरबती तथा दशांग धूप आधसेर। २९ वासक्षेप। ३० कुंकुम (रौली) आधसेर। ३१ प्रभुको वधानेके लिये कुंकुमसे रंगे हुए चावल सेर ५। ३२ विनारंगे सफेद चावल २॥ सेर। ३३ स्नात्रियोंके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

खडे रहनेको या बैठनेको पटडे (पाटला) ६४। ३४ चीज-वस्तु रखनेके लिए छोटे परंतु लंबे पटडे (पाट) १५। ३५ मिश्री (साकर) सवासेर। ३६ पतासे २॥ सेर। ३७ पेडे २॥ सेर नंग ९६। ३८ लडु ९६। ३९ पूरी ९६। ४० खाजां (खजले) ९६। ४१ इक्षु (गन्ने-शेलडी) के टुकडे ९६। ४२ मुशक काफूर (कपूर) तोला ५। ४३ अष्टापद पर्वतके रंगने के लिये पांच जातिके रंग।

अष्टापद पर्वतकी रचना.

अहमदाबाद आदि कई शहरों में अष्टापदकी रचना बनी बनाई होती है परंतु जहां न होवे और महोत्सवकरने की इच्छा होवे तो प्रथम शुद्ध म्होटी विशाल भूमिके मध्य भाग में १॥ गज प्रमाण गोल पर्वत का थडा बने इस रीति ईंट माटीका पर्वत चिनना। चिनते हुए तीन मेखला (त्रागडी) बनवानी। दक्षिणके पासे आठ पौडी (पगथियां) रखनी। ऊंचा तीन चार गज और चौडा देढ दो गज चोरस रखना। जाति जाति के रंगसे पहाडको रंग विरंग करना। ऊपर एक बडा चोरस-टूटीवाला (नालचुवाला) सिंहासन, बाजोठ (चोकी) के ऊपर रखना। सिंहासनके उपर पूर्व दिशामें दो जिन बिंब, दक्षिण में चार जिनबिंब, पश्चिममें आठ जिन बिंब और उत्तरमें दश जिनबिंब स्थापन करने। जिनबिंब छोटे म्हाटे होवे-परन्तु नासिका सबकी एक सरीखी बराबर आवे-इस रीति स्थापन करने।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पूजन स्थापन.

सपत्निक (सजोडे) १६ स्नात्री तैयार होवे वह चारों तर्फ चार चार आम सामने पटडेपर बैठ जावें। वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर वास क्षेप तैयार रखना। ३२ करेबियोंमें जल कलश १ चंदन कटोरी (वाटकी) २ फूल तथा छोटे हार ३ धूप ४ दीप (लालटैन–फानसमें) ५ अक्षत (चावल) ६ फल ७ और नैवेद्य ८ तथा आरती मंगल दीवा और काफूर (कपूर) करेबियों में धर कर कतार बंध पंक्तिबंध सब करेबियां चारों दिशा में बैठे हुए चार चार सपत्निक (सजोडे) स्नात्रीके सनमुख पटडों पर रखदेनी। पहाडके नजीक अखला या बाजोठ (चोकी) के ऊपर थाल या बडी करेबी में एक एक जिन प्रतिमा चारों तर्फ स्थापन करनो। सामने सामग्री चढाने के वास्ते एक एक अखला या बाजोठ (चोकी) रखदेनी।

पूर्व दिशा पूजनस्थापन.

पूर्व दिशाके चारों सजोडोंको वास क्षेप करके पूर्व दिशा का पूजन स्थापन करना।

" ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये पूर्वदिशासंस्थित ऋषभ अजित जिन बिंब अत्र अवतर संवौषट् स्वाहा " [आह्वान मुद्रासे आह्वान करना। " आओ पधारो " कहना।] पुनः–

" ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चैत्यालये पूर्वदिशासंस्थित ऋषभ अजित जिन बिंब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा " [स्थापन मुद्रासे स्थापन करना] पुनः-

" ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये पूर्वदिशासंस्थित ऋषभ अजित जिन बिंब अत्र मम सन्निहितो भव भव " [सन्निधापनं कल्याण करो]

इस विधिसे स्थापन करके चारोंही सजोडे अपनी अपनी सामग्रीकी थाली संभाल लेवें और खडे होकर नीचे स्थापनकी हुई जिन प्रतिमाका अष्ट द्रव्यसे पूजन करें। तथाहि

ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये पूर्वदिशासंस्थित ऋषभ अजित जिन बिंबेभ्यो जलं समर्पयामि १। चंदनं समर्पयामि ४। दीपं समर्पयामि ५। अक्षतं समर्पयामि ६। फलं समर्पयामि ७। नैवेद्यं समर्पयामि ८। "

पीछे चारों सजोडे (चार पुरुष चार स्त्रियां एवं आठ जने) आरती उतारें।

आरती.

जय जिनवर देवा प्रभु जय जिनपति देवा। चउसठ सुरपति नर नरपति जस करते नित सेवा जयदेव २ ॥ अंचली ॥ जय कैलास निवासी, जगजन हितकारी ॥ प्र० ज० ॥ जय अष्टापद शिखरे, चउमुख जयकारी जयदेव जयदेव ॥१॥ दोय चार अठ दशकी,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शोभा नहीं पारा ॥प्र० शो०॥ पीला सोल जिनेश्वर, भविजन सुखकारा ॥ जयदेव जयदेव ॥ २ ॥

आरती उतार कर चारों सजोडे अपनेअपने स्थानपर बैठ जावें। इति पूर्वदिशापूजनस्थापनम् ॥

दक्षिण दिशा पूजन स्थापन.

दक्षिण दिशाके चारों सजोडों को वास क्षेप करके दक्षिण दिशाका पूजन स्थापन करना–

" ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये दक्षिणदिशासंस्थित संभव १ अभिनंदन २ सुमति ३ पद्म प्रभ ४ जिन बिंब अत्र अवतर अवतर संवौषट् स्वाहा।" [आह्वान मुद्रा से आह्वान करना। "आओ पधारो" कहना।]

" ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये दक्षिण दिशा संस्थित–संभव १ अभिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रभ ४ जिन बिंब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा "

(स्थापन मुद्रासे स्थापन करना) पुनः—

" ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये दक्षिणदिशासंस्थित–संभव १ अभिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रभ ४ जिन बिंब अत्र मम सन्निहितो भव भव" (सन्निधापनं कल्याण करो).

इस विधिसे स्थापन करके चारों ही सजोडे अपनी अ-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पनी सामग्री की थाली संभाल लेवें और खडे होकर नीचे स्थापन करी हुई जिन प्रतिमा का अष्ट द्रव्यसे पूजन करें। तथाहि—

"ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये दक्षिणदिशासंस्थित–संभव १ अभिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रभ ४ जिन बिंबेभ्यो जलं समर्पयामि १ चंदनं समर्पयामि २ पुष्पं समर्पयामि ३ धूपं समर्पयामि ४ दीपं समर्पयामि ५ अक्षतं समर्पयामि ६ फलं समर्पयामि ७ नैवेद्यं समर्पयामि ८।" पीछे चारों सजोडे आरती करें।

आरती.

जय जिनवर देवा प्रभु जय जिनपति देवा,
चउसठ सुरपति नर नरपति जस करते नित सेवा।
जय देव जय देव–अंचली।
दो नीला दो शामल, दोय उज्जल सोहे। प्रभु० दो०।
दो राता चौवीसही, भविजन मन मोहे ॥जयदेव २
लंछन देह बराबर, पद्मासनवंता प्र० पद्मासन०
नाशाभाग बराबर, चउ दिशी सोहंता ॥ जय० ॥

आरती उतार कर चारों सजोड़े अपनी अपनी जगा बैठ जावें। इति दक्षिणदिशापूजनस्थापनम् ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पश्चिम दिशा पूजन स्थापन।

पश्चिम दिशाके चारों सजोडों को वासक्षेप करके पश्चिम दिशाका पूजन स्थापन करना।

"ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये पश्चिमदिशासंस्थित–सुपार्श्व १ चंद्र प्रभ २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८ जिन बिंब अत्र अवतर अवतर संबौषट स्वाहा।"

(आह्वान मुद्रासे आह्वान करना "आओ पधारो" कहना)

पुनः—

"ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये पश्चिमदिशासंस्थित–सुपार्श्व १ चंद्र प्रभ २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८ जिन बिंब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा।"

(स्थापन मुद्रासे स्थापन करना) पुनः—

"ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये पश्चिमदिशासंस्थित–सुपार्श्व १ चंद्र प्रभ २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८ जिन बिंब अत्र मम सन्निहि हितो भव भव." (सन्निधापनं कल्याण करो)

इस रीति से स्थापन करके चारों ही सजोडे अपनी अपनी सामग्रीकी थाली संभाल लेवें और खडे हो कर नीचे स्थापन करी हुई जिन प्रतिमा का अष्ट द्रव्यसे पूजन करें। तथाहि—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

"ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये पश्चिमदिशासंस्थित-सुपार्श्व १ चंद्र प्रभ २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८ जिन बिंबेभ्यो जलं समर्पयामि १ चंदनं समर्पयामि २ पुष्पं समर्पयामि ३ धूपं समर्पयामि ४ दीपं समर्पयामि ५ अक्षतं समर्पयामि फलं समर्पयामि ७ नैवेद्यं समर्पयामि ८ "

पीछे चारों सजोडे आरती करें।

आरती.

जय जिनवर देवा प्रभु जय जिनपति देवा।
चउसठ सुरपति नर नरपति जस करते नित सेवा।
जय देव जय देव। अंचली।
सासु वहु दोय भगिनी, बंधव निन्नानुं। प्र० बंधव।
सर्व परिकर प्रतिमा, आगम से जानुं जयदेव २॥१।
पुन मंदोदरी रावण नाटक आचरता। प्र० नाटक०।
ततथै ततथै थै थै जिनपद अनुसरता जयदेव २॥ २॥

आरती उतार कर चारों सजोडे अपनी अपनी जगा बैठ जावें। इति पश्चिमदिशापूजनस्थापनम्॥

उत्तर दिशा पूजन स्थापन।

उत्तर दिशाके चारों सजोडों को वासक्षेप करके उत्तर दिशा का पूजन स्थापन करना।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

"ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये उत्तरदिशासंस्थित–धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनि सुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वर्द्धमान १० जिन बिंब अत्र अवतर अवतर संवौषट् स्वाहा।"

[आह्वान मुद्रासे आह्वान करना "आओ पधारो" कहना] पुनः—

"ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये उत्तरदिशासंस्थित–धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनि सुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वर्द्धमान १० जिन बिंब अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा"

(स्थापन मुद्रासे स्थापन करना) पुनः–

"ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये उत्तरदिशासंस्थित–धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनिसुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वर्द्धमान १० जिन बिंब अत्र मम सन्निहितो भव भव।"

(सन्निधापनं कल्याण करो)

इस प्रकार स्थापन करके चारोंही सजोडे अपनी अपनी सामग्री की थाली संभाल लेवें और खडे होकर नीचे स्थापन करी हुई जिन प्रतिमाका अष्ट द्रव्य से पूजन करें तथाहि–

"ॐ ह्रीं श्रीं कैलासाष्टापदशिखरे श्री सिंहनिषद्या चैत्यालये उत्तरदिशासंस्थित–धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनि सुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वर्द्धमान

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१० जिनबिंबेभ्यो जलं समर्पयामि १ चंदनं समर्पयामि २ पुष्पं समर्पयामि ३ धूपं समर्पयामि ४ दीपं समर्पयामि ६ अक्षतं समर्पयामि ७ फलं समर्पयामि ८ नैवेद्यं समर्पयामि ८।" पीछे चारों सजोडे आरती करें।

आरती.

जय जिनवरदेवा प्रभु जय जिनपति देवा।
चउसठ सुरपति नर नरपति जस करते
नित सेवा–जयदेव जयदेव ॥ अंचली ॥
कोडाकोडी सागर, तीरथ जगतारु ॥ प्र० ती० ॥
पौडी आठही दीपे, अष्टापद चारु ॥ जयदेव२ ॥१॥
दीपविजय कवि राजे, छाजे ठकुराई ॥ प्र० छा० ॥
भरतेश्वर नृप शोभा, जिनकीरत गाई जयदेव२ ॥२॥
आतमलक्ष्मी हर्ष अनुपम, श्री संघ जयकारी ॥प्र०श्री॥
वल्लभ जिनपद सेवा, भवसिंधु तारी॥ जयदेव२ ॥३॥

इति उत्तरदिशापूजनस्थापनम् ॥

पीछे चारों दिशामें सब सजोडें एक साथ आरती उतारे। संपूर्ण आरती जलदी जलदी एक सरीखी सुरीली आवाजसें पढें।

आरती.

जय जिन वरदेवा प्रभु जय जिनपति देवा।
चउसठ सुरपति नर नरपति जस करते नित

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सेवा–जयदेव जयदेव ॥ अंचली ॥
जयकैलास निवासी, जगजन हितकारी–प्रभु जग०
जयअष्टापद शिखरे, चउमुख जयकारी–जयदेव २॥१॥
दोय चार अठ दशकी, शोभा नहीं पारा, प्रभु शोभा०
पीला सोल जिनेश्वर, भविजन सुखकारा जय०२॥२॥
दो नीला दो शामल, दोय उज्जल सोहे, प्रभु दोय० ।
दो राता चौवीसही, भविजन मन मोहे ॥जय०२॥३॥
लंछन देह बराबर, पद्मासनवंता–प्रभु पद्मा० ।
नाशा भाग बराबर, चउदिशि सोहंता ॥जयदेव२॥४॥
सासु वहु दोय भगिनी, बंधव निन्नानुं, प्रभु बंधव० ।
सर्व परिकर प्रतिमा, आगमसे जानुं ॥जयदेव२ ॥५॥
पुन मंदोदरी रावण, नाटक आचरता, प्रभु नाट० ।
ततथै ततथै थैथै, जिनपद अनुसरता ॥जयदेव२ ॥६॥
कोडाकोडी सागर, तीरथ जगतारु, प्रभु तीरथ० ।
पौडी आठही दीपे, अष्टापद चारु ॥ जयदेव२ ॥७॥
दीपविजय कविराजे, छाजे ठकुराई ॥ प्रभु छाजे० ।
भरतेश्वर नृप शोभा, जिनकीरत गाई ॥ जयदेव २ ॥८॥
आतमलक्ष्मी हर्ष अनुपम, श्रीसंघ जयकारी, प्रभु श्री०
वल्लभ जिनपद सेवा, भवसिंधु तारी ॥जयदेव२ ॥९॥

॥ इति ॥

[पूजाकी समाप्तिमें भी यही आरती ६४ स्नात्रियें सब मिलकर करें]

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वाद में खमासमण देकर " अविधि आशातना हुई होवे तस्स मिच्छामिदुक्कडं " कह कर सब सजोडें मंडपसे विदाय होजावें। इस रीतिसे सर्व विधिके समाप्त होजाने बाद ६४ स्नात्री एक एक तर्फ १६ के हिसाबसे चारोंही तर्फ आमसामने आठ आठ कतार बंध प्रत्येक पूजामें पूजाकी सामग्री लेकर खडे हो जावें और पूजा पढानी प्रारंभ कर देवें।

॥ इति ॥

☞ सोलह सजोडोंकी पूजाकी सामग्रीकी थालीमें और ६४ स्नात्रीकी पूजाकी प्रति थालीमें अपनी इच्छानुसार नकद चढाना योग्य है। कमसे कम प्रति थाली दो आनी तो अवश्य होनी चाहिये। पूजामें जो कुछ नकद चढाया जावे वो भंडारमें देव द्रव्यकी वृद्धिमें समझना। यदि किसीकी रचनापूर्वक अति उत्साहसे उत्सव करनेकी इच्छा न होवे और यही पूजा पढानेकी इच्छा होवे तो वो यथाशक्ति लाभ लेकर अपने उत्साहको पूरा कर सकता है। उसके लिये अष्ट द्रव्यादि जो जो उपयोग की वस्तु होवें उनका होना तो जरुरी है। आठ द्रव्योंकी आठ थालीमें कमसे कम दो दो आनीतो नकद अवश्य रखनी चाहिये, अधिकके लिये अपनी इच्छा। बाकी जहां जहां पूजा आदिका जो जो रीवाज होवे वहां वहां उसका यथाशक्ति उपयोग रखना चाहिये।

॥ इतिशुभम् ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ अथाष्टापद कल्पः ॥

(आर्यावृत्तम्)

वरधर्म कीर्त्ति ऋषभो विद्यानन्दाश्रितः पवित्रितवान्, देवेंद्र वन्दितो यं, स जयत्यष्टापद गिरीशः ॥ १ ॥ यस्मिन्नष्टापदे ऽभूदष्टापद मुख्य दोष लक्ष हरः, अष्टापदाभ ऋषभः, ॥ स० ॥२॥ ऋषभ सुता नवनवति बाहुबलि प्रभृतयः प्रवर यतयः, यस्मिन्न भजन्नमृतं ॥ स० ॥ ३ ॥ अयुजुर्निर्वृत्ति योगं वियोग भीरव इव प्रभोः समकं, यत्रार्षि दश सहस्राः ॥ स० ॥४॥ यत्राष्ट पुत्र पुत्रा, युगपद् वृषभेण नव–नवति पुत्राः, समयैकेन शिव मगुः ॥ स० ॥५॥ रत्नत्रय मिव मूर्तं स्तूप त्रितयं चितित्रय स्थाने, यत्रास्थापयदिन्द्रः ॥ स० ॥६॥ सिद्धायतन प्रतिमं, सिंह निषद्येति यत्र सुचतुर्द्वाः, भरतो ऽरचयच्चैत्यं ॥ स० ॥ ७ ॥ यत्र विराजति चैत्यं, योजन दीर्घं तदर्ध पृथुमानम्, क्रोश त्रयोच्च मुच्चैः ॥ स० ॥ ८ ॥ यत्र भ्रातृ प्रतिमा व्यधाच्चतु-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विंशतिं जिन प्रतिमाः, भरतः सात्म प्रतिमाः,
॥ स० ॥९॥ स्वस्वाकृति मिति वर्णांक वर्णितान्
वर्तमान जिन बिंबान्, भरतो वर्णित वानिह ॥स०
॥ स० ॥ १० ॥ स प्रतिमा भ्रव–नवातिं बंधु स्तूपां
स्तथार्हत स्तूपम्, यत्रारचय च्चक्री ॥ स० ॥ ११ ॥
भरतेन मोह सिंहं हन्तु मिवाष्टापदः कृताष्टपदः, शु-
शुभेऽष्ट योजनो यः ॥स०॥१२॥ यस्मिन्ननेक कोट्यो
महर्षयो भरत चक्रवर्त्याद्याः, सिद्धिं साधित वन्तः
॥ स० ॥ १३ ॥ सगर सुताग्रे सवार्थ शिवगतान् भ-
रत वंश राजर्षिन्, यत्र सुबुद्धिरकथयत् ॥ स० ॥
॥१४॥ परिखा सागर मकरं सागराः सागराश्रया
यत्र, परितो रक्षिति कृतये ॥ स० ॥१५॥ क्षाल-
यितु मिव स्वैनो जैनो यो गंगयाश्रितः परितः,
संतत मुल्लोल करैः॥ स० ॥१६॥ यत्र जिन तिलक
दानाद्दमयंत्यापे कृतानुरुप फलम्, भाल स्वभाव
तिलकं ॥ स० ॥ १७ ॥ यम कूपारे कोपात्क्षिपन्नलं
वालिनांह्रिणाक्रम्य, आरावि रावणोऽरं ॥स०॥१८॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जुज तंत्र्या जिन मह कुल्लंकेंद्रो ऽवाप यत्र धरणेंद्रात्, विजयामोघां शक्तिं ॥ स० ॥ १९॥ यत्रारिमपि वसन्तं तीर्थे प्रहरन् सुखेचरोऽपि स्यात्, वसुदेव मिवाविद्यः ॥ स० ॥२०॥ अचले ऽत्रोदय मचलं स्वशक्ति वन्दित जिनो जनो लभते, वीरो ऽवर्णयदिति यं ॥ स० ॥२१॥ चतुर श्चतुरोऽष्ट दश द्वौ चापाच्यादि दिक्षु जिन बिंबान्, यत्रावन्दत गणभृत् ॥ स० ॥ २२ ॥ प्रभु भणित पुंभरीका ध्ययनात् सुरो ऽत्र दशमो ऽभूत्, दश पूर्विपुंभरीकः ॥स०॥२३॥ यत्र स्तुत जिन नाथो दीक्षित तापस शतानि पंचदश, श्री गौतम गणनाथः ॥स०॥२४॥ इत्यष्टापद पर्वत इव योऽष्टापद मय श्चिर स्थायी, व्यावर्णि महा तीर्थं, स जयत्यष्टापद गिरीशः ॥ २५ ॥ इति श्री अष्टापद कल्पः ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वन्दे वीरमानन्दम्

श्री अष्टापद तीर्थपूजा.

दोहरा.

ऋषभ शांति नेमि प्रभु, पारस जिनवर वीर ।
चरण कमल मस्तक धरुं, जय जग तारण धीर ॥१॥
पूजन दोय प्रकारसे, जिनशासन विख्यात ।
द्रव्य भाव पूजन कही, महानिशीथे वात ॥२॥
भावस्तव मुनिवर करे, चारित्र जिनगुण गान ।
जस फल शिव संपद वरे, अक्षय अविचल थान ॥३॥
द्रव्यस्तव जिन पूजना, त्रिविध पंच परकार ।
अंठ[८] दससँत[१७] इकवीसँ[२१]की, अष्टोत्तँर[१०८] जयकार ॥४॥
द्रव्य भाव दोनों सही, श्रावक करणी जान ।
भाव नीर सींचन करें, समकित तरुवर मान ॥५॥
फल होवे अति भावसे, गुणि गुण करत वखान ।
पूजक भाव गुणी करुं, वर्णन सुखको निदान ॥६॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(माढ-मोरे गमका तराना—)

अष्टापद वंदो पाप निकंदो भवजल तार-नहार, प्रभु आदि जिनंदो शिवसुख कंदो भावसे वंदो भवजल तारनहार ॥ अंचली०॥ लक्ष्मीसूरि तपगच्छपतिरे, श्रुत गंभीर उदार। भावस्तव पूजन कियोरे, स्थानक वीस प्रकार ॥ प्रभु०॥१॥ स्थानक वीसकी सेवनारे, तीर्थंकर पद पाय। महिमा जगमें विस्तरेरे, रंकनको करे राय ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ जसविजय वाचक गणीरे, कीनो पूजन भाव। नवपद श्रीसिद्ध चक्रकीरे, पूजा विविध बनाव ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ रूपविजय पूजन कियोरे, भाव स्तवन गुणग्राम। आगम पणतालीसकोरे, पंच-ज्ञान गुण धाम ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ वीरविजय वर्णन कियोरे, भावस्तवन भगवान। अष्टकर्म सूदन प्रभुरे, चउसठ पूजा गान ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ आगम पैंतालीसकीरे, नवनवति परकार। पूजा रची व्रत बारकीरे, श्रावकके हितकार ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ विजयानंद सूरीशनेरे, कीनो धर्म उद्धार। पूजन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विविध प्रकारसेरे, दरसायो मग सार॥ प्रजु०॥७॥
तस वल्लज लघु सेवकेरे, मंदमति गुणहीन। तास
प्रजावे जावसेरे, जक्ति रचना कीन ॥ प्रजु०॥८॥
नमन करी गुरु देवकोरे, सिमरी सारदमाय।
दीपविजय कविराजकीरे, शुज रचना सुपसाय
॥ प्रजु० ॥ ए ॥ हंसविजय मुनिराजकीरे, शुज
आज्ञा अनुसार। नगर समानामें रचीरे, पूजा
जय जयकार ॥ प्रजु० ॥ १० ॥ आतम लक्ष्मी
कारणीरे, पूजा जिनवरदेव। हर्षे वल्लज कीजियेरे
जिनवर पदकी सेव ॥ प्रजु० ॥ ११ ॥

पहली जलपूजा.

दोहरा.

अष्टापद तीरथ तनी, पूजा अष्ट प्रकार।
अष्टापद दूरें हरे, अष्टापद जयकार ॥ १ ॥
अष्टापद उत्सव करे, जो नर धर शुज आस।
तास विधि संक्षेपसे, सुनिये मन उल्लास ॥ २ ॥

(वसंत–होइ आनंद बहाररे.)

अष्टापद हितकाररे, जविसेवो तीरथको॥अंचली०

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ नूमी शुद्ध बनाय केरे, लीजे द्रव्य सुधाररे ॥ नवि० ॥ १ ॥ अष्टापद गिरि राजकारे, कीजे शुन आकाररे ॥ नवि० ॥ २ ॥ दोय चार अठ दस प्रजुरे, पूरव दक्षिण धाररे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ पश्चिम उत्तर चउ दिशारे, थापे जिनवर सारे ॥ नवि०॥४॥ आठ आठ नर चउ दिशिरे, कलश लइ मनोहाररे ॥ नवि० ॥५॥ ऐसे आठों द्रव्यसेरे, पूजनका अधिकाररे ॥ नवि० ॥ ६ ॥ आतम लक्ष्मी हर्षसेरे, वल्लन तीरथ तारे नवि० ॥ ७ ॥

दोहरा.

पूर्व तृतीयारक रहे, लाख चुरासी सेस ।
बादल होवे सब जगा, समकाले दस देस ॥ १ ॥
जलधर जाति पांचके, वरसे सम मिट जाय ।
नूमी विषमाकारमें, ऊंची नीची थाय ॥ २ ॥
अवसरपिणी उत्सर्पिणी, लोम विलोम कहाय ।
शाश्वत नावे जिन कहे, काल स्वनाव बनाय॥३॥

(तुमे तो भले बिराजोजी.)

तुमे तो नले बिराजोजी अष्टापद तीरथके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्वामी जले बिराजोजी ॥ अंचली ॥ आरे तीन गइ चौवीसी, सागर कोमाकोम । नवमें काल युगलका होवे, कहते गणधर जोम ॥ तुमे० ॥१॥ आरे तीन ऋषज चौवीसी, इनमें जी यह रीत । ऋषज प्रजुके समय अगारां, कोमाकोमी मीत ॥ तुमे० ॥ २ ॥ पांच जरत अरु पांच इरावत, दश क्षेत्रे समजाव । दस अठ सागर कोमाकोमी, एक सरीसा जाव ॥ तुमे० ॥ ३ ॥ इस कारण षम- वति क्षेत्रे, युगलिक जाव समान । जंबूद्वीप पन्नत्ति जीवा, जिगमे गणधर वान ॥ तुमे० ॥ ४ ॥ लाख चौरासी पूरव बाकी, तीसरा आरा जान । नाजि नृप कुलकरके कुलमें, प्रगट जये जगवान ॥ तुमे० ॥ ॥ ५ ॥ आतम लक्ष्मी प्रगट करनको, प्रगट जये महाराज । आतम लक्ष्मी हर्षे वल्लज, नमिये श्री जिनराज ॥ तुमे० ॥ ६ ॥

दोहरा.

अष्टापद गिरि है कहां, कितना है परमान ।
कैसे अष्टापद हुओ, सुनिये तास वखान ॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(सारंग–केहरवा–हमें दम दे कर.)

कारण तीरथ जिन प्रगटाना ॥ अंचली० ॥
जंबूद्वीप दक्षिण दरवाजा, मध्यभाग वैताढय कहाना ॥ का० ॥ १ ॥ नगरी अयोध्या भरतकी कहिये, जिनवर गणधर यह फरमाना ॥ का० ॥ २ ॥ निकट अयोध्या अष्टापद गिरि, बत्तीस कोश ऊंचा परमाना ॥ का० ॥ ३ ॥ तिस नगरीमें नाभि नरपति, मरुदेवा तस नार वखाना ॥ का० ॥ ४ ॥ तस कुक्षी शुक्तिमें मोती, अवतरिया जिन त्रिभुवन राना ॥ का० ॥ ५ ॥ चौथ वदि आषाढकी जानो, च्यवन कल्याणक श्री जिन गाना ॥ का० ॥ ६ ॥ चैत्र वदि अष्टमी प्रभु जाये, जन्म कल्याणक त्रिभुवन जाना ॥ का० ॥ ७ ॥ आतमलक्ष्मी वल्लभ हर्षे, विलसे त्रिभुवन जन सुख माना ॥ का० ॥ ८ ॥

काव्य—

गंगा नदी पुन तीर्थ जलसे कनकमय कलशे भरी, निज शुद्ध भावे विमल थावे न्हवण जि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नवरको करी। नव पाप ताप निवारणी प्रनु पूजना जगहित करी, करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ १ ॥

मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पूर्वदिक् संस्थित—ऋषन्न १ अजितश दक्षिणदिक् संस्थित संन्नव १ अन्निनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रन्न ४—पश्चिमदिक् संस्थित—सुपार्श्व १ चंद्रप्रन्नश सुविधि २ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८—उत्तरदिक् संस्थित धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनिसुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वीर १० निष्कलंकाय चतुर्विं-शति जिनाधिपाय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

दूसरी चंदनपूजा.

दोहरा.

दूजी पूजा नवि करो, चंदनकी सुखकार ।
चंदन लेपन जीनतनू, वंछित फल दातार ॥१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(केसरिया थासुं-यह चाल)

जिन जन्म कल्याणक उत्सव करेरे शुभ भावसे ॥ अंचली० ॥ चैत्र वदि अष्टमी मंगलिक दिन मध्य रात्रि शुभ वेला । जिन जन्मोत्सव कारण मेरु सुर सुरपति होय जेला रे ॥ जि०॥१॥ पांच रूप करके सुरपति जिन एकरूप ग्रही हाथे। दोय रूप चामर करते हैं, एक छत्र धरे माथे रे ॥ जि० ॥ २ ॥ वज्र उछालत चालत आगे एक रूप सुरस्वामी । मेरु पर जा गोदमें प्रभुको पधरावे सुख कामी रे ॥ जि० ॥३॥ साठ लाख एक कोटि कलशे स्नात्र करावे भावे । सहस चउसट्ठी एक अभिषेके वार अढीसौ थावे रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ विधिसे जन्म महोत्सव करके, मात पास लेइ आवे । चिरंजीव आसीस देयके, द्वीप नंदीश्वर जावे रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ क्रमसे नाभि नरपति सुरपति, मिल प्रभु नाम धरावे । ऋषभदेव प्रभु आतम लक्ष्मी, वल्लभ अति हर्षावेरे ॥ जि०॥६॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दोहरा.

बंश गोत्र प्रभु ऋषभका, थापे सुरपतिराज ।
सागर कोडाकोडमें, वरत रहा है आज ॥ १ ॥
वनराजी हुइ मेघसे, हुओ काश समुदाय।
सातवार ऊगे सही, इक्षु रूपे थाय ॥ २ ॥

(कवाली.)

प्रभु श्री आदि जिनवरसे, वंश और गोत्र गाया है । यही शास्त्रोंमें गणधरने, खुलाशा खूब गाया है ॥ प्र० अंचली ॥ हरि उत्साहसे प्रभुके, वंश और गोत्र थापन को। लंबी सी इक्षु लष्ठिको लिये प्रभु पास आया है ॥ प्र० १ ॥ पसारा हाथ जिनजीने, हरि खुश हो दिया इक्षु। प्रभुका वंश इक्ष्वाकु, गोत्र काश्यप कहाया है ॥ प्र० २॥ प्रभु दो वीस ही इनमें, हुए दो वीस बाइसमें। हरिवंश गोत्र गौतममें, इक्ष्वाकु वंश गाया है ॥ प्र० ३ ॥ समय जानी पिता माता, सुनंदा और मंगलाका । मिली संग देव देवीके, विवाहोत्सव रचाया है ॥ प्र० ४॥ हुये सोपुत्रं दो पुत्री भरत बाहु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बली म्होटे। जरतसे सूर्य बाहुसे, शशी वंशी सुहाया है ॥ प्र० ५ ॥ सूत्र श्री कल्पमें प्रभुके, गोत्र और वंशका वर्णन। आतम लक्ष्मी प्रभु हर्षे, वल्लभ मनमें समाया है ॥ प्र० ६ ॥

काव्य—

सरस चंदन घसिय केसर भेली मांही बरासको, नव अंग जिनवर पूजते भवि पूरते निज आसको। भव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी, करु विमल आतमकारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ॥२॥

मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पूर्वदिक् संस्थित—ऋषभ १ अजित २ दक्षिण दिक् संस्थित—संभव १ अभिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रभ ४ पश्चिमदिक् संस्थित—सुपार्श्व १ चंद्रप्रभ २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ वि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मल्ल ७ अनंत ८ उत्तरदिक् संस्थित–धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनिसुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वीर १० निष्कलंकाय चतुर्विंशति जिनाधिपाय चंदनं यजामहे स्वाहा॥२

तीसरी पुष्प पूजा.

दोहरा.

पूजा कुसुमकी तीसरी, करिये जवि गुणहेत।
इह जव परजव सुख लहे, शिव संपद संकेत॥ १
मालति मरुआ मोगरा, केतकी जाइ फूल।
यतनासे जिन पूजिये, होवे लाज अमूल॥ २॥

(लावनी–मराठी–ऋषभजिनंद विमलगिरिमंडन.)

आदि जिनेश्वर आदि नरेश्वर, जगजीवन हितकारीरे। प्रभु अति उपकारी, किया जिन नीति मार्गको जारीरे॥ अंचली॥ अवसर्पिणीमें प्रथम जिनंदका, जीतकल्प अवधारीरे। उत्सर्पिणीमें कुलकर मानो नीतिका अधिकारीरे॥ आ० १॥ थापन राज्य प्रभुका सुरपति, आवे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

समय विचारीरे। मंरूप रचना सुंदर करके करे उत्सव मनोहारीरे ॥ आ० २॥ राज्याभिषेक कियो प्रभुजीको, सिंहासन पदधारीरे। छत्र चमर आदिसे शोभा, करते प्रभु अलंकारीरे॥ आ०३॥ आये युगलिक जलको लेकर, देखे प्रभु शृंगारीरे। दक्षिण अंगुष्ठे जल सींचे, उत्सव मनमें धारीरे॥ आ० ४ ॥ युगलिक नरका देख विनयगुण नगरी विनीता सारीरे। इंद्र हुकम वैश्रमण वसावे, नाम अयोध्या वारीरे॥ आ० ५ ॥ जंबू दक्षिण दरवाजा और, वैताढ्य मध्य अनुसारीरे। आतम लक्ष्मी विनीता वल्लभ, आदिजिनंद बलिहारीरे॥ आ० ६ ॥

दोहरा.

युगलिक रीति निवारके, शुभनीति व्यवहार।
अवधपति वरताइया, ये है अनादि चार. १

(गिरिवर दर्शन विरलापावे यह चाल—पीलू.)

जय जिनवर जगनीति चलावे, नीति च-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लावे अनीति मिटावे ॥ अं० ॥ पांच शिल्प प्रभु मुख्य बतावे, वीस वीस तस भेद जनावे ॥जय०१ बहत्तर पुरुष कला सुखदाइ, चउसठ नारी कला सिखलावे ॥ जय० २ ॥ लेखन गणित क्रिया अष्टादश, इम नीति सब प्रभु दरसावे ॥जय० ३॥ राजनीति सेना चतुरंगी, राजा प्रजाका कृत्य सुनावे ॥ जय० ४ ॥ पृथक पृथक देइ राज्य पुत्रको, नंदन नामसे देश वसावे ॥ जय० ५ ॥ ब्यासी लाख पूरव घरवासे, पूर्ण करी प्रभु दीक्षा पावे॥ जय० ६ ॥ वरसी दान देइ जगस्वामी, अनुकंपा मारग वरतावे ॥ जय० ७ ॥ चैत्र वदि अष्टमी दिन दीक्षा, कल्याणक प्रभु ऋषभ कहावे ॥जय० ८ ॥ एक हजार वरस छद्मस्थे, एक वरस तप कीनो भावे ॥ जय० ए ॥ अक्षय तृतीया श्रेयांस राजा, पारणा इक्षु रससे करावे ॥ जय० १० ॥ क्षीरसे पारणा तेइस जिनका, ऋषभका इक्षु रससे सुहावे ॥ जय० ११ ॥ प्रथम प्रभुका दाता क्षत्रिय, ब्राह्मण तेइस जिन फरमावे ॥ जय० १२ ॥ सुर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सुख आतम लक्ष्मी जोगी, वल्लभ मनमें अति हर्षावे ॥ जय० १३ ॥

—:०:—

काव्य—

सुरभि अखंडित कुसुम मोगरा आदिसे प्रभु कीजिये, पूजा करो शुभ योग तिग गति पंचमी फल लीजिये। भव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी, करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ ३ ॥

मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पूर्वदिक् संस्थित ऋषभ १ अजित २ दक्षिणदिक् संस्थित संभव १ अभिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रभ ४—पश्चिमदिक् संस्थित—सुपार्श्व १ चंद्रप्रभ २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८—उत्तरदिक् संस्थित—धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनिसुव्रत ६ नमि ७ नेमि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ठ पार्श्व ए वीर १० निष्कलंकाय चतुर्विंशति जिनाधिपाय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

चौथी धूपपूजा.

दोहरा.

पूजा धूपकी कीजिये, चौथी चतुर सनेह ।
नाव वृक्षको सींचिये, मानी अमृत मेह ॥१॥

(थई प्रेमवश पातलिया.)

नविजीवको हितकारी, प्रभु पूजनकी बलिहारीरे ॥ नवि० अंचली ॥ आये विचरते अवध पुरि वदि आठम फाल्गुन मासे । जस ध्यान सुकल ऊजासे, हुए घाति करम क्षय चारीरे ॥ न० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दरस तब प्रगटे लोका लोक प्रकाशी, जिम रेखा हस्त विकाशी, आवे सुर सुरपति नर नारीरे ॥ नवि० ॥२॥ समवसरण रचना सुर कीनी नरतजी वंदन आवे, मरुदेवाको संग लावे, माता मन हर्ष अपारीरे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ समजावे बंधनको छेदी माता मोक्ष पधारी,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हुउं शिवपद् मारग जारी, जिनशासन जग जय-
कारोरे ॥ ज्ञवि० ॥४॥ संघ चतुर्विध थापे प्रज्ञुजी
अवसर्पिणीमें आदि, जिनशासन रीति अनादि,
तीर्थंकर पद अनुसारीरे ॥ ज्ञवि० ॥ ५ ॥ लाख
पूरव विचरी प्रज्ञु अंते मोक्ष समयको जानी,
अष्टापद् आये ज्ञानी, दश सहस मुनि परिवारी
रे ॥ ज्ञवि० ॥ ६ ॥ आतम लक्ष्मीकारण सबने हर्षे
अनशन कीना, मुक्तिवल्लज्ञ पद् लीना, दियो
आवागमन निवारीरे ॥ ज्ञवि० ॥ ७ ॥

दोहरा.

माघ वदि तेरस कही, मेरु तेरस नाम ।
कल्याणक पंचम हुउं, अष्टापद् शुज्ञ गाम ॥१॥
कल्याणक उत्सव करे, चउसठ सुरपति आय ।
प्रज्ञु सेवाको मानते, निज आतम सुखदाय ॥२॥

(लेली लेली पुकारे वनमें)

प्रज्ञु आदि जिनेश्वर स्वामी, हुए परमातम
पदगामी ॥ प्र० अंचली ॥ मिल चउसठ सूरपति

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आवे, प्रभु विरह शोक दरसावे । निरुत्साह करे सब काम, लेवे वार वार प्रभु नाम ॥ प्र० ॥ १ ॥ शुरू जलसे प्रभु न्हवरावे, बावनाचंदन चरचावे । जिनवर गणधर मुनि तीन, सुरपति सुर विधि सब कीन ॥ प्र० ॥ २ ॥ चय चंदन काष्ठ बनावे, देव अग्नि कुमार जलावे । करे ठंमी मेघ कुमार, ग्रहे दाढा हरि आचार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ करी पीठ पाडुका थापे, कीर्त्ति जस जगमें व्यापे । इम जंबू द्वीप प्रज्ञप्ति, कहे आवश्यक निर्युक्ति ॥ प्र० ॥४॥ करी नंदीश्वर अठाइ, उत्सव हरि स्वर्गे जाइ । करे जिनदाढाकी सेवा, समकित फल निर्मल लेवा ॥ प्र० ॥ ५ ॥ आतमलक्ष्मी प्रभु हर्षावे, पूजा चौथी पूरण थावे । वज्रनाभ वर्णन अष्टापदका, सुनी नाश होवे आपदका ॥ प्र० ॥ ६ ॥

काव्य—

दशांग धूप धुखायके जवि धूप पूजासे लिये, फल उर्ध्वगति सम धूम दहि निज पाप जवज-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वके किये । नवपाप ताप निवारणी प्रनु पूजना जग हितकरी, करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ ४ ॥

मंत्र–

ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पूर्वदिक् संस्थित–ऋषन्न १ अजित २–दक्षिणदिक् संस्थित–संनव १ अनिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रन्न ४–पश्चिमदिक् संस्थित–सुपार्श्व १ चंद्रप्रन्न २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८–उत्तरदिक् संस्थित धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनिसुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ए वीर १० निष्कलंकाय चतुर्विंशति जिनाधिपाय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

पांचमी दीपक पूजा

दीपक पूजा पंचमी, पंचम गति दातार ।
नाव धरी नवि कीजिये, आतम निश्चय धार ॥१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(देश–त्रिताल–लावनी)

अवसर्पिणी आदिनाथ हुये निरवानी, अष्टापद तीरथ नाथ नमो जवि प्रानी ॥ अंचली । किया अनशन प्रभुने जान भरत वहां आवे, चल अवधपुरीसे पाद अष्टापद जावे । पर्यंकासन संस्थित प्रभुको भावे, परिकर्मा करके तीन सीसको नमावे । धन्य धन्य जगत प्रभु आप भरत मुखवानी ॥ अष्टा० ॥ १ ॥ निर्वाण समय भरतेश्वर मूर्च्छा खावे, समझावे सुरपति सोग को दूर हटावे । स्वामी संस्कार निकट भूतलमें करावे, सुंदर मंदिर भरतेश्वर पाप खपावे । दियो सिंह निषद्या नाम अतिशय ज्ञानी ॥ अष्टा० ॥ २ ॥ निज निज जिन देह प्रमाण प्रतिमा मानो, चउ पासे जिन चउवीस विराजे जानो । पूर्वादि दिशि दोय चार आठ दश सोहे, ऋषभादि वीरजिनंद जवि मन मोहे । सम नाशा एक समान दृष्टि ठैरानी ॥ अष्टा० ॥ ३ ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदना भावे, दक्षिण दिशि मूल प्रवेश हिसाब

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कहावे। संजव आदि सुपार्श्व आदि धर्मादि, ऋषजादि नमिये गमिये कर्म अनादि। पूजक पूजासे शीघ्र वरे शिवरानी ॥ अष्टा० ॥ ४ ॥ संग शाश्वती प्रतिमा चार जरत पधरावे, त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित दरसावे। नवनवति भ्राता और जगिनी दो माता, मणिमय मूर्त्ति सब स्थापन कर गुणगाता। सेवा करती निज मूर्त्ति साथ जरानी ॥ अष्टा० ॥ ५ ॥ जारतपति पूजा अष्ट द्रव्यसे करते, आरति मंगल दीपक विधि सब अनुसरते। मणिरत्न सुवर्ण रजत पुष्पोंसे वधावे, *अक्षत मोती इम संघ वधावे जावे। आतम लक्ष्मी हर्षे वल्लज धन्य मानी ॥ अष्टा० ॥ ६ ॥

दोहरा.

जारतपति चिंतन करे, तीरथ जग जयवंत।
लोजी लोक अज्ञानसे, विषम काल विरतंत ॥१॥

* इस स्थानपर मोती सुवर्ण रजत पुष्प रंगीन अक्षत पुष्पादिसे श्रीसंघ प्रभुको वधावे और पूजाकी समाप्तिमें पुनः प्रभुको वधावे.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

न करे को आशातना, कारण जरत नरेश ।
जाग विषम गिरि तोरके, कीना साफ प्रदेश ॥२॥

(सोहनी–कहरवा–सिद्धगिरि तीरथपर जानाजी)

अष्टापद तीरथ गानाजी, गानाजी सुख पानाजी ॥ अष्टापद० अंचली ॥ एक एक योजनके अंतर, आठ किये सोपानाजी ॥ अष्टा० ॥१॥ इम अष्टापद तीरथ थापे, जरत जरतका रानाजी ॥ अष्टा० ॥ २ ॥ अरिसा जवनमें केवल पायो, अंत हुये निरवानाजी ॥ अष्टा० ॥३॥ क्रमसे आठ पाट तक केवल, गणांग आठमा गानाजी ॥ अष्टा० ॥ ४ ॥ पांचमी पूजा तीरथ थापन, अष्टापद गिरि मानाजी ॥ अष्टा० ॥ ५ ॥ आतमलक्ष्मी चउवीस जिनवर, वल्लभ हर्ष अमानाजी॥अष्टा०॥६॥

काव्य–

जिम दीपके परकाससें तम चौर नासे जानिये,
तिम जाव दीपक नाणसे अज्ञान नास वखानिये ।
जव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकरी,
करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

धरी ॥ ५ ॥ मंत्र–

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पूर्वदिक् संस्थित–ऋषभ १ अजित २–दक्षिणदिक् संस्थित संभव १ अभिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रभ ४–पश्चिमदिक् संस्थित–सुपार्श्व १ चंद्रप्रभ २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८–उत्तरदिक् संस्थित–धर्म १ शांति २ कुंथु अर ४ मल्लि ५ मुनिसुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वीर १० निष्कलंकाय चतुर्विंशति जिनाधिपाय दीपकं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

छट्ठी अक्षत पूजा

दोहरा.

छट्ठी पूजा जिनतनी, अक्षतकी सुखकार ।
भाव धरी भविकीजिये, अक्षत फल दातार ॥१॥
पचास लाख कोडि सही, आरा अर्ध प्रमान ।
शासन अविचल ऋषभका, सुरपद शिवपद खान २

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(अब मोहे पार उतार चिंतामणि)

जगजीवन आधार ऋषभजी जगजीवन आधार वंशपरंपर पाट असंख्या आवागमन निवार ॥ अंचली ॥ सूर्य यशासे चउद लाख नृप, पहुंचे मोक्ष मझार ।ऋ०। एक गया सर्वार्थ सिद्धमें, त्यागन कर संसार ॥१॥ चउद लाख मोक्ष सर्वारथ, सिद्धे एक विचार । ऋ० । एक एक सरवारथ सिद्धे, संख्यातीत उदार ॥ २ ॥ चउद लाख मोक्षे सरवारथ, सिद्धे दो अवतार। ऋ० । तीन चार यावत पंचाशत, सर्व असंख्या धार ॥ ३ ॥ चउद लाख नरपति सरवारथ, सिद्धे पद अवधार । ऋ० । एक गया राजा मोक्षे इम, सर्व विलोम प्रकार ॥ ४ ॥ इत्यादि वर्णन नंदि अरु, सिद्ध दंडिका सार । ऋ० । आतम लक्ष्मी निज गुण प्रगटे, वल्लभ हर्ष अपार ॥ ५ ॥

दोहरा.

ऋषभसेन मुनि जानिये, पुंडरीक गणधार ।
क्रमसे आदि जिनंदके, पाट असंख विचार॥१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(रेखता–जिनंद जस आज मैं गायो)

शासन आदिनाथ जयकारी, असंख्या पाट सुखकारी । गये मुक्तिमें नरनारी, स्वर्ग छवीस अवतारी ॥ १ ॥ अर्ध आरामें जिनवरका, प्रभु श्री आदि ईश्वरका । चला शासन जगदीशा, अर्धमें तीन और वीशा ॥२॥ तीरथ प्रभु थापना सोहे, चतुर्विध संघ मन मोहे । गणि गण अंग विस्तारा, अनादि तीर्थ आचारा ॥३॥ प्रजाकर वंश प्रभु सागर, असंख्या पाट गुण आगर । भरत चक्री ऋषभ वारे, सगर चक्री अजित तारे ॥ ४ ॥ भूप जितशत्रु कुलनंदा, हुए सुत दोय रवि चंदा । अजित जिनराज सुखकारी, सगर नृप चक्री पद धारी ॥ ५ ॥ आतम लक्ष्मी प्रभु करता, अनादि भरमके हरता । हर्ष धरी सेविये भावे, वल्लभ प्रभु तीर्थ गुण गावे ॥ ६ ॥

काव्य—

शुभ द्रव्य अक्षत पूजना स्वस्तिक सार बनाइये, गति चार चूरण भावना भवि भावसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मन जाइये । जव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जगहित करी, करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ ६ ॥

मंत्र--

ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पूर्वदिक् संस्थित ऋषभ १ अजित २ दक्षिणदिक् संस्थित संभव १ अभिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रभ ४ पश्चिमदिक् संस्थित सुपार्श्व १ चंद्रप्रभ २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८ उत्तरदिक् संस्थित धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनिसुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वीर १० निष्कलंकाय चतुर्विंशति जिनाधिपाय अकृतान् यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

सातमी फलपूजा.

दोहरा.

फल पूजा प्रभु सातमी, मोक्ष महा फल हेत ।
शुभ भावे भवि कीजिये, पुण्य अतुल संकेत ॥१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(सोहनी–ढुंढ फिरा जगसारा.)

अष्टापद सुखकारा सुखकारा भविजन कीजे अर्चना ॥ अंचली० ॥ पुण्यवंत यह तीरथ भेटी, सुख लेवे दुःख देवे मेटी । तीरथ तारन हारा सुखकारा भविजन कीजे अर्चना ॥ अ० ॥ १ ॥ तीरथ अष्टापद भवितारण, चक्री सगरसुत वंदन कारण । आये साठ हजारा सुखकारा भविजन कीजे अर्चना ॥ अ० ॥ २ ॥ दक्षिणदिशि संभव अभिनंदा, सुमतिनाथ पद्म प्रभ चंदा । वंदन करे जिन चारा सुखकारा भविजन कीजे अर्चना ॥ अ० ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि सुपार्श्व जिनंदा, चंद्र प्रभ श्री सुविधि मुनंदा । शीतल शीतलकारा सुखकारा भविजन कीजे अर्चना ॥ अ० ॥ ४ ॥ श्रेयांस वासुपूज्य जिनेसर, विमल अनंत जिन नाथ जुगेसर । वंदन भवजल पारा सुखकारा भविजन कीजे अर्चना ॥ अ० ॥ ५॥ उत्तरदिशि श्री धर्म सुहंकर, शांति कुंथु अरनाथ धुरंधर । श्रीमल्लिनाथ जुहारा सुखकारा भविजन कीजे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अर्चना ॥ अ० ॥ ६ ॥ मुनिसुव्रत नमि नेमि धीर, पार्श्व वीर नमे पूरव तीर । ऋषभ अजित जयकारा सुखकारा भविजन कीजे अर्चना ॥अ० ॥ ७ ॥ नमन करे इम जिन चउवीश, आतम लक्ष्मी कारण ईश । वल्लभ हर्ष अपारा सुखकारा, भविजन कीजे अर्चना ॥ अ० ॥ ८ ॥

दोहरा.

हम कुल भरत नरेसरु, कीना एह विहार ।
धन मरु देवी मात को, धन्य ऋषभ अवतार. ॥१॥
विषम कालको जानके, तीरथ रक्षा काज ।
योजन योजन अंतरे, पौंचो आठ समाज. ॥२॥
अष्टापद गिरि धन्य है, धन्य भरत महाराज ।
धन्य हमारे भाग्य हैं, जनम सफल हम आज. ॥३॥

(श्री राग–वीरजिनदर्शन नयनानंद.)

तीरथ सेवा शिवतरु कंद–तीरथ सेवा–अंचली–
चक्री सगर सुत चितमें चिंतत, तीरथ रक्षा लाज अमंद । अष्टापद फिरती चउ तरफी, करिये खाइ अतिही महंद ॥ ती० १ ॥ शत योजन खुदवाइ खाइ, शत्रुंजय महातम यूं कहंद । धूर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

परी जब नाग निकाये, आये नाग यह कथन करंद ॥ ती० २ ॥ नागलोकके बाल बुद्धि वश, अपराधी हो सगर फरजंद । तुम अपराध तरफ जो देखें, बाली जस्म करें तुम खंद ॥ ती० ३ ॥ ऋषन वंश के हो इस कारण, क्रोध नहीं हम मनमें धरंद । नागकुमार जवन रत्नोंके, रजरेणुसे होत मलंद ॥ त० ४ ॥ माफ करो गुणवंता सज्जन, हितशिक्षा हम ध्यान लहंद । नागकुमार गये यूं कहके, चक्री नंदन मन शोच करंद ॥ ती० ५ ॥ जरिये खाइ गंगा जलसे, तीरथ स्थिर चिरकाल रहंद । दंम रत्नसे खोदके गंगा, ले आये गंगाजल वृंद ॥ती०६॥ गंगाजल आया खाइमें, नागनिकायके जवन गिरंद । क्रोध करी आकर सुर साथे, साठहजारको दाह करंद ॥ ती ०७ ॥ तीरथ रक्षा जाव प्रजावे, स्वर्ग बारवें जा उपजंद । आतम लक्ष्मी जन्मांतरमें, वल्लभ हर्षे सबही लहंद ॥ ती० ८ ॥

काव्य—

फल पूर्ण लेनेके लिये फल पूजना जिन की-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जिए, पण इंद्रि दामी कर्म वामी शाश्वता पद लीजिए ॥ नव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जगहितकारी, करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ॥ ७ ॥

मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पूर्वदिक् संस्थित ऋषभ १ अजित २–दक्षिणदिक् संस्थित–संभव १ अभिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रभ ४–पश्चिमदिक् संस्थित–सुपार्श्व १ चंद्रप्रभ २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८ उत्तरदिक् संस्थित–धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनिसुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वीर १० निष्कलंकाय चतुर्विंशति जिनाधिपाय फलानि यजामहे स्वाहा॥

आठमी नैवेद्य पूजा.

दोहरा.

नैवेद्य पूजा आठमी, जात जात पकवान।
थाल भरी जिन आगलें, धरियें चतुरसुजान. ॥१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मालकोश–त्रिताल—

प्रभु वीरनाथ उपदेश सार, सुन भव्य जीव भव उतरे पार ॥ प्रभु० अंचली ॥ तीरथ अष्टापद अवदात, भूचर चरकर करत जात। होवे तद्भव भवसे पार ॥ प्रभु वीरनाथ० १ ॥ सुनकर गौतम गणधर धाये, निजलब्धि अष्टापद आये। वंदत जिनवर वीस चार ॥ प्रभु वीरनाथ० २ ॥ चउ-अठ दस दोय भावे वंदन, निजगुण रंजन कर्म निकंदन । तीरथ अष्टापद जुहार ॥ प्रभु वीरना-थ० ३ ॥ तापस पंदरसो तीन देखी, भूल गये सब अपनी शेखी। गौतम गुरु लिये दिलमें धार ॥ प्रभ वीरनाथ० ४ ॥ आतम लब्धी गौतम स्वामी, तापस आतम लब्धी पामी। हर्षे वल्लभ प्रभु ती-र्थंकार ॥ प्रभु वीरनाथ० ५ ॥

दोहरा.

भरतेश्वर के समयमें, अष्टापद हुउं नाम।
अष्टापद गिरि खाइका, चक्री सगरसे काम ॥१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तीरथ कायम जानिये, पंचम आरा अंत।
देवाधिष्ठित मानिये, इम भाषे भगवंत ॥ २ ॥

(धनाश्री–पूजन करोरे आनंदी.)

अष्टापद जयकार तीरथ जग अष्टापद जयकार ॥ अंचली ॥ पंदरसो तीन तापस कीना, पारणा चित्त उदार ॥ तीरथ जग अष्टा० १ ॥ क्षीराश्रव लब्धिसे गौतम, तृप्त किया अनगार॥ तीरथ जग अष्टा० २॥ पांचसो एकने केवल पायो, पायस जिमतां सार॥ तीरथ जग अष्टा०३॥ पांचसो एकने केवल लीनो, समवसरण निरधार ॥ तीरथ जग अष्टा० ४ ॥ केवली पांचसो एक हुए हैं, वीर वचन अवधार॥ तीरथ जग अष्टा० ५॥ केवली परिसद जाय बिराजे, नमो तित्थस्स उच्चार॥ तीरथ जग अष्टा० ६ ॥ आतम लक्ष्मी प्रभुता साधी, वल्लभ हर्ष अपार ॥ तीरथ जग अष्टा० ७ ॥

कलश.

(मन मोह्या जंगलकी हरणीने.)

भविनंदो तीरथ जस वरणीने ॥ भविनंदो ॥ अंचली॥ अष्टापद तीरथ जग उत्तम, जिनशा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सन उदय करणीने ॥ ज०१ ॥ चार आठ दस दोय जिनेश्वर, थापे जरत भूधरणीने ॥ ज०२॥ तप गछ गगनमें दिनमणि सरिसे, विजयानंद सूरिचरणीने ॥ ज० ३ ॥ तस शिष्य लक्ष्मी विजय महाराजा, हर्ष विजय अनुसरणीने ॥ ज०४॥ तस लघु सेवक वल्लभ विजये, सुगम रीत अघहरणीने ॥ज०५॥ अंक ऋषि निधि इंदु वर्षे, फागन सुदि दूज तरणीने ॥ ज०६॥ नगर समाना रचना कीनी, शांतिनाथ जिन सरणीने ॥ज०७॥ मुक्ता अक्षत पुष्प वधावो, तीरथ पार उतरणीने ॥ ज०८॥ भूल चूक मिछामिदुक्कम, आतम लक्ष्मी जरणीने ॥ ज०९ ॥

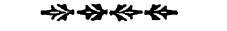

काव्य—

सरस मोदक आदिसे भरी थाली जिनपुर धारिये। निर्वेदी गुण धारी मने निज भावना जनि वारिये ॥ भव पाप ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हित करी। करु विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय सन धरी ॥ ८ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पूर्वदिक् संस्थित—ऋषभ १ अजित २ ॥ दक्षिणदिक् संस्थित—संभव १ अभिनंदन २ सुमति ३ पद्मप्रभ ४—पश्चिमदिक् संस्थित—सुपार्श्व १ चंद्रप्रभ २ सुविधि ३ शीतल ४ श्रेयांस ५ वासुपूज्य ६ विमल ७ अनंत ८—उत्तरदिक् संस्थित—धर्म १ शांति २ कुंथु ३ अर ४ मल्लि ५ मुनिसुव्रत ६ नमि ७ नेमि ८ पार्श्व ९ वीर १० निष्कलंकाय चतुर्विंशति जिनाधिपाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥८॥

☞ विधिमें दी हुई आरती ६४ स्नात्री उतारे। बाकी शांतिधारा आदि जो कुछ करना होवे यथेच्छा करें ॥

इति तपगच्छाचार्य १०८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि शिष्य महामुनि श्री १०८ श्रीलक्ष्मीविजयजी शिष्य मुनिमहाराज श्री १०८ श्री हर्षविजयजी शिष्य मुनि वल्लभविजय विरचिताष्टापद तीर्थ पूजा ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ श्री अष्टापद तीर्थ स्तवन ॥

श्री तीरथपद पूजो गुणीजन–ए देशी

तीरथ अष्टापद जयवंतु, वर्ते छे जग मांहे रे ।
स्तवन तेहनुं अष्टापदना, कल्पथी करीए उच्छांहेरे ॥ती०॥१॥
श्री आदीश्वर पावन करीने, पाम्या परमानंदरे ।
दश हजार मुनीश्वर साथे, कापी कर्मना कंदरे ॥ ती० ॥२॥
ऊत्कृष्टी अवगाहना वाला, साथे सिद्धि वरीयारे ।
एकसो आठ बाहुबली आदि, एक समयमां तरीयारे॥ती०३॥
ते सांभलीने भरत नरेश्वर, अयोध्याथी आवेरे ।
पगे चाली अंतेऊर साथे, नमन करी गुण गावेरे ॥ती० ॥४॥
कोस त्रण ऊंचुं रत्नहेमनुं, देहरुं तेह करावेरे ।
रत्ननो वर्ण मानोपेत प्रतिमा, चोवीश जोननी ठावेरे॥ती०॥५॥
तीर्थंकर गणधर मुनिवरनां, स्तूप इंद्र बनावेरे ।
रत्नत्रयी सम ऊज्वल जोइ, भविजन शीर झुकावेरे ॥ती०॥६॥
मोहसिंह मद फेटन कारण, अष्टापद सम कहीयेरे ।
भरतादिक क्रोडो मुनिवर जीहां, मुक्तिपद शुभ लहीयेरे॥ती०॥७॥
साठ हजार सगर चक्रीना, पुत्रो यात्राए आव्यारे ।
चक्रवर्तीना रत्नादिकनी, ऋद्धि सिद्धि इहां लाव्यारे॥ती०॥८॥
निज पूर्वजना कीर्ति थंभ सम, देवळथी हर्षायारे ।
एहवुं देहरुं बंधाववाने, ते पण बहु ललचायारे ॥ ती० ॥९॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पण तेवुं कोइ ऊत्तम स्थानक, मलीयुं नही तव भावेरे।
रक्षा करवा ए तीरथनी, ऊंडी खाइ खोदावेरे ॥ ती० ॥१०॥
गंगा पाप पोतानुं पखालवा, मानु आवे प्रसरतीरे।
खाइमां दाखल थइ तीरथने, प्रदक्षिणा दीये फरतीरे ॥ती०॥११॥
रत्न तिलक चोवीश जीन भाले, पूर्व भवमां चढावीरे।
दमयंती निज भाले तिलकरुप, दिधुं तेवुं फल लावीरे ॥ती०॥१२॥
तुटो तांत निज नसथी बांधो, रावणे विण बजावीरे।
अमोघ शक्ति इंद्रथी पामी, तीर्थंकर थया भावीरे ॥ती० ॥१३॥
चार आठ दस दोय जोन वांदे, गणधर गौतमस्वामीरे।
दक्षिण दिशिथी प्रदक्षिणा दिये, मुक्ति निर्णयना कामीरे॥ती० १४
पंदरसें तापस प्रतिबोधी, दीक्षा इहां पर आपीरे।
वज्रस्वामीना जीव जंभकनी, शंका स्वामीए कापीरे ॥ती०॥१५॥
विजयानंद सूरीश्वर केरा, शिष्य सकल शणगाररे।
लक्ष्मीविजय पंडित थया तस, हंस नमे अणगाररे ॥ती० ॥१६॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com